57

“नई व पुरानी बातें”

बाइबल पाठ #23

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमशः)।
- ढ. बाद में यहूदिया की सेवकाई (क्रमशः)।
  - 6. यीशु और लोगों की भीड़ (क्रमशः)।
    - ख. भौतिकवाद पर शिक्षा (लूका 12:13-34)।
    - ग. चौकसी पर शिक्षा (लूका 12:35-48)।
    - घ. आ पहुंची त्रासदी पर शिक्षा (लूका 12:49-59)।
    - ड. मन फिराव पर शिक्षा (लूका 13:1-9)।
  - 7. यीशु और एक रोगी स्त्री (सब्त का विवाद) (लूका 13:10-21)।
- ण. स्थापन का पर्व (लूका 13:22; यूहन्ना 10:22)।
  - 1. उसके शत्रुओं के साथ झगड़ा जारी (यूहन्ना 10:23-30)।
  - 2. उसे मारने के प्रयास जारी (यूहन्ना 10:31-39)।
- त. पिरिया में सेवकाई।
  - 1. यीशु की सेवकाई “यरदन के पार” (मत्ती 19:1, 2; मरकुस 10:1; यूहन्ना 10:40-42)।
  - 2. यीशु से पूछताछ और चेतावनी (लूका. 13:23-35)।

परिचय

इस पाठ में, हम पलिश्तीन के सभी भागों में यीशु की अन्तिम सेवकाई की समीक्षा जारी रखेंगे। हम बाद की यहूदिया की सेवकाई को समाप्त करके, समर्पण के पर्व के लिए यरूशलेम में प्रभु के जाने को देखेंगे और फिर पिरिया की उसकी सेवकाई का अध्ययन आरम्भ करेंगे।

अपने शत्रुओं की घृणा बढ़ने के साथ, मसीह ने अपने चेलों को आवश्यक बातें सिखाने के अपने प्रयास और तेज़ कर दिए थे (देखें लूका 12:22)। इस समय दी गई शिक्षा का दायरा और मात्रा अभिभूत करने वाली है। सच्चाई को चकरा देने वाली दूरी पर सच्चाई की चोटी पर रखा गया है।

इसमें से अधिकतर शिक्षा गलील में पहले दी गई शिक्षा की पुनरावृत्ति ही है।[1] जैसा कि पहले ध्यान दिलाया गया, सुनने वाले अलग होने के कारण ऐसा होना स्वाभाविक ही था। इसके अलावा, उसके साथ आने वालों को इन सच्चाइयों को बार-बार बताने की

आवश्यकता थी (जैसे हमें भी है; 2 पतरस 1:12, 13, 15; 3:1)। परन्तु इस दौरान कही गई, उसकी कुछ बातें नई थीं। उदाहरण के लिए, बाइबल के हमारे इस पाठ में कई दृष्टांत हैं, जिनका हमने पहले अध्ययन नहीं किया है।

पहले, मसीह ने ''उस गृहस्थ'' का उदाहरण दिया ''जो भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है'' (मती 13:52)। इस अध्ययन में, हम प्रभु को सच्चाई के अपने खज़ाने से ''पुरानी'' और ''नई'' सच्चाइयों को लाते हुए देखेंगे।

लोभ पर पुरानी और नई शिक्षा (लूका 12:13-34)

एक विनती (आयतें 13-15)

जब यीशु लोगों को वचन सुना रहा था (12:1), तो बीच में किसी ने रोक दिया: ''भीड़ में से एक ने उस से कहा, हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की सम्पत्ति मुझे बांट दे'' (आयत 13)। व्यवस्था में ऐसे मामलों को निपटाने का ढंग बताया गया था (व्यवस्थाविवरण 21:15-17)। सवाल खड़े होने पर झगड़े को आम तौर पर रब्बी लोग ही निपटाते थे। शायद (कइयों की तरह) इस आदमी को उम्मीद थी कि मसीह एक सांसारिक राज्य बनाएगा, जिस कारण वह शीघ्र-बनने-वाले राजा को अपने पारिवारिक झगड़े में अपने पक्ष में करना चाहता था।

यीशु ने इस आदमी को डांटा (आयत 14) और फिर भीड़ को सावधान किया, ''चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन[2] उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता'' (आयत 15)। अनुवादित शब्द ''लोभ'' का अर्थ ''और पाने की इच्छा'' है और नये नियम में ''इसका [इस्तेमाल] बुरे अर्थ में ही होता है।''[3] बहुत से लोगों की लालसा और, और पाने की होती है, जो कभी सन्तुष्ट नहीं होती और दूसरों के बजाय अपने पर केन्द्रित होती है। बाइबल में इसे ''लोभ'' कहा गया है और ज़ोरदार ढंग से इसका खण्डन किया गया है (इफिसियों 4:19; कुलुस्सियों 3:5; देखें 1 कुरिन्थियों 5:11)।

एक दृष्टांत (आयतें 16-21)

मसीह ने एक धनी किसान का दृष्टांत बताया, जिसे लगा था कि उसका जीवन ''उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से'' है (आयत 15)। परमेश्वर ने कहा कि वह आदमी ''मूर्ख'' था (आयत 20)।[4]

एक विचार (आयतें 22-34)

यीशु ने जीवन पर उचित विचार बनाने के लिए धनी मूर्ख का दृष्टांत देने के बाद समझाया। इसमें से अधिकतर बातें पहाड़ी उपदेश में पहले बताई गई थीं,[5] परन्तु कुछ नई बातें भी थीं। उदाहरण के लिए, अपने सुनने वालों से राज्य को ढूंढ़ने का आग्रह करके

(आयत 31; मत्ती 6:33 से तुलना करें) मसीह ने उन्हें आश्वस्त किया कि परमेश्वर ने उन्हें राज्य *देना* था (आयत 32)।[6]

फिर, पहाड़ी उपदेश में यीशु ने अपने चेलों को बताया था, ''परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो'' (मत्ती 6:20क)। अब उसने उन्हें बताया कि वे ''स्वर्गीय बचत खाता'' *कैसे* खोल सकते हैं: ''अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो, जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता'' (आयत 33)[7]। यदि आप किसी ठण्डे, सीलन भरे फर्श वाले घर में रहते हों और कोई मित्र आकर फर्श पर खराब होने वाली चीज़ों को देखे, जैसे कपड़ों के ढेर, कीमती पुराना फर्नीचर, और ऐसी चीज़ें? यदि आपको वह इन्हें ऊपर छत पर सुखाने के लिए डाल देने की सलाह दे, तो क्या वह आपके भले की बात नहीं कर रहा होगा।[8] यीशु के कहने का अर्थ था कि ''यदि तुम अपना खज़ाना सम्भालकर रखना चाहते हो, तो *उन्हें छत पर रख दो* ।''

और, अधिक चीज़ें पाने की ललक रखने वाले संसार को लूका 12:13-34 की शिक्षाओं की आवश्यकता है। हम में से हर एक के लिए यीशु के शब्द कि ''किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता'' बार-बार सुनना आवश्यक है। इस पर विचार करें: किसी की सफलता या असफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि उसने कितना सामान इकट्ठा किया है। ''किसी के जीवन को नापने का आधार उसके कारोबार को नापने की तरह नहीं है।''[9] आदमी *के पास* क्या है और वह स्वयं क्या *है,* दोनों में अन्तर है।

तैयार रहने पर पुरानी और नई शिक्षा (लूका 12:35-48)

तैयार रहने को प्रोत्साहित किया गया (आयतें 35-40)

''स्वर्ग में सम्पत्ति'' पर अपनी शिक्षा के बाद मसीह ने चेलों को उसके लौटने पर तैयार रहने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे उस स्वर्गीय निवास में जा सकें: ''तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'' (आयत 40)।[10]

हर समय तैयार रहने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए, यीशु ने कई उदाहरण दिए। कुछ लोग यहां छह अलग-अलग दृष्टांतों को देखते हैं:[11] प्रतीक्षा करने वाले सेवकों का दृष्टांत (आयतें 36-38), रात के समय चोर का दृष्टांत (आयत 39),[12] बुद्धिमान भण्डारी का दृष्टांत (आयतें 42-46), और ज्ञानी और अज्ञानी सेवकों का दृष्टांत (आयतें 47, 48)।

पहले दृष्टांत में यह ज़ोर दिया गया कि सेवकों को तैयार रहना चाहिए कि उनका स्वामी जब चाहे आ जाए।[13] उदाहरण में, यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह कमर बान्ध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उन की सेवा करेगा'' (आयत 37)। मसीह के श्रोताओं के लिए दास स्वामी के प्रतीक्षा करने वाले का वस्त्र पहनने और अपने दासों को भोजन बांटने की

कल्पना करना कठिन था-पर इससे उस अद्‌भुत सच्चाई की झलक मिलती है कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से ईमानदारी से अपनी सेवा करने वालों को प्रतिफल देगा (मत्ती 25:21; यूहन्ना 14:1-3; प्रकाशितवाक्य 21:4)।

ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया गया (आयतें 41-48)

पतरस को समझ नहीं आ रहा था कि सेवकों पर यीशु की शिक्षा की सामान्य प्रासंगिकता थी या वह मुख्यतया उससे और दूसरे प्रेरितों से बात कर रहा था (आयत 41)। मसीह ने सेवक का एक और उदाहरण देकर उत्तर दिया।[14] उसने एक स्वामी के बारे में बताया, जो बाहर जाते समय एक भण्डारी को, "नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन सामग्री दे" (आयत 42)। प्रभु ने कहा कि यदि स्वामी के वापस आने तक वह सेवक ईमानदारी से अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करता तो उसे पुरस्कार मिलना था (आयतें 43, 44)। दूसरी ओर, यदि वह भण्डारी अपने अधिकार का दुरुपयोग करता, तो उसे कड़ा दण्ड मिलना था (आयतें 45, 46[15])। इस पद की शास्त्रियों और फरीसियों पर प्रासंगिकता बनाए बिना जो परमेश्वर के लोगों पर इंचार्ज थे, पढ़ना कठिन होगा (देखें मत्ती 23:2) पर उन्होंने इस दायित्व को ईमानदारी से पूरा नहीं किया था (देखें मत्ती 9:36; यूहन्ना 10:12)।

फिर मसीह ने कहा, "और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला बहुत मार खाएगा। परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे, वह थोड़ी मार खाएगा" (आयतें 47, 48क)। ये शब्द कहने का यीशु का उद्देश्य नरक में दण्ड की डिग्रियों पर नई शिक्षा की घोषणा करना नहीं था।[16] वह तो इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि *अवसर के साथ ज़िम्मेदारी भी होती है।* उसने आगे कहा, "जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगे" (आयतें 48ख)। जितना बड़ा अवसर, उतनी ही बड़ी ज़िम्मेदारी (देखें याकूब 3:1)।

पतरस के इस प्रश्न पर कि यीशु की शिक्षा सामान्य थी या उसकी विशेष प्रासंगिकता थी, मसीह का उत्तर था (लूका 12:41) कि "*दोनों* ही बातें हैं।" परमेश्वर प्रदत्त विशेष ज़िम्मेदारियों के साथ यह *सामान्य* रूप में लागू होती थी। न्यू लिविंग ट्रांसलेशन में प्रभु के उत्तर का अनुवाद इस प्रकार लिखा गया है: "मैं *किसी भी* विश्वासी, विवेकी सेवक से बात कर रहा हूं जिसे प्रभु ... ज़िम्मेदारी ... सौंपता है" (आयत 42)। परन्तु यदि पतरस और अन्य प्रेरितों को इतनी समझ थी, तो उन्हें समझ आ जाना चाहिए था कि दृष्टांतों की उनके लिए *विशेष* प्रासंगिकता थी। प्रभु उन्हें "बहुत" दे रहा था; इसलिए उनसे "बहुत" का हिसाब मांगा जाना था। मुझे और आपको भी यह समझ होनी आवश्यक है कि लूका 12:47, 48 *हमसे* बात करता है: क्या परमेश्वर ने हमें बहुत नहीं दिया है ?[17] इसलिए, क्या हम से बहुत का हिसाब नहीं मांगा जाएगा ? "जिसके कान हों वह सुन ले" (प्रकाशितवाक्य 2:7क)।

ठुकराए जाने पर पुरानी और नई शिक्षा (लूका 12:49-59)

ठुकराया जाना शान्ति भंग कर देता है (आयतें 49-53)

अपने फिर आने की बात करते हुए (12:40), स्पष्टतया यीशु को उन बहुत सी घटनाओं का ध्यान था, जो उसकी मृत्यु सहित, उसके आने से पहले घटित होनी थीं: ''मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं; और क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती! मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा!'' (आयतें 49, 50)। ''बपतिस्मा'' उसके कष्ट सहने के बपतिस्मे को कहा गया है।[18] मसीह अपने पीछे क्रूस की कठिन परीक्षा की राह देख रहा था। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है, ''यह आवेग ... हमें उद्धारकर्त्ता के मन में छिपी भावना के तूफ़ान की झलक पाने में सहायता करता है।''[19]

''पृथ्वी पर आग लगाने'' का हवाला उसकी सेवकाई के भयंकर परिणामों के सम्बन्ध में था। यीशु ने आगे कहा, ''क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, वरन अलग कराने आया हूं'' (आयत 51; देखें मत्ती 10:34)। मसीह की बात को गलत न समझें। वह फूट नहीं, शान्ति चाहता था। उसने अपने चेलों से ''आपस में मेल-मिलाप से'' रहने का आग्रह किया (मरकुस 9:50)। प्रभु ने हर अनुयायी को ''सबसे मेल-मिलाप रखने'' की आज्ञा दी है (इब्रानियों 12:14)।[20] इसके साथ ही, वह जानता था कि कुछ लोग इसे ग्रहण करेंगे, जबकि दूसरे उसे ठुकराएंगे और इस कारण उन में फूट पड़ जाएगी।

> क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; मां बेटी से, और बेटी मां से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी (लूका 12:52, 53; देखें मत्ती 10:35, 36क)।[21]

आप में से कई लोग इस पद को इतनी अच्छी तरह समझते हैं, जिसकी मुझे कभी समझ नहीं आ सकती। जहां भी फूट होती है, वहां प्रभु का मन दुखी होता है।

ठुकराया जाना विचार को नष्ट करता है (आयतें 54-59)

जो लोग यीशु को सुन रहे थे, उनमें से कइयों ने पहले ही उसे ठुकरा दिया था (आयत 56)। उसने कहा कि ये लोग गलत निर्णय करने के दोषी थे (आयत 57)। उसने उन पर उसके आश्चर्यकर्म, उसके जीवन तथा उसकी शिक्षाओं को, जिनसे यह सिद्ध होता था कि वह मसीहा है, जैसे ''चिह्नों को पढ़ने'' में अयोग्य रहने का आरोप लगाया (आयतें 54-56; देखें मत्ती 16:2, 3)। शायद उस आदमी को वापस बुलाते हुए, जो अपने परिवार का झगड़ा निपटाने के लिए आया था, उसने कहा कि उन्हें दूसरों को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है (आयतें 58, 59; मत्ती 5:25, 26 से तुलना करें)। जब कोई प्रभु को

ठुकराता है तो उसके सोचने की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है।

मन फिराव पर पुरानी और नई शिक्षा (लूका 13:1-9)

मन फिराओ या नाश हो जाओ (आयतें 1-5)

सिखाना जारी रखते हुए (आयत 1क) यीशु को ''उन गलीलियों की चर्चा'' पर ''जिन का लोहू पीलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिलाया था'' (लूका 1ख) रोक दिया गया।[22] मसीह ने इस रुकावट को मन फिराव पर शिक्षा देने के लिए एक अवसर के रूप में बदल दिया:

> क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। या क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट[23] गिरा, और वे दब कर मर गए: यरूशलेम के और सब रहने वालों से अधिक अपराधी थे? मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओ तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होगे (आयतें 2-5)।

इतिहास इनमें से किसी विपत्ति के बारे में कुछ नहीं बताता है। पीड़ित जो भी हुए थे, यहूदियों ने यही निष्कर्ष निकाला था कि वे दुष्ट पापी लोग होंगे, जिन पर यह विपत्ति पड़ी। पहले यीशु ने अपने चेलों को यह सिखाया था कि हम किसी को उसके दुख सहने के कारण अपराधी नहीं मान सकते (यूहन्ना 9:3)।[24] अब उसने ध्यान दिलाया कि *सब लोग* पापी हैं (देखें रोमियों 3:23) और आत्मिक मृत्यु के योग्य हैं (देखें रोमियों 6:23)। उसका निष्कर्ष था कि ''यदि *तुम* मन न फिराओगे तो तुम भी इसी रीति से नष्ट होगे'' (लूका 13:3, 5)। मन फिराव का अर्थ मन का बदलना है, जो जीवन बदलने का कारण बनता है। इसमें यह अहसास होना कि पाप कितना भयानक है और फिर प्रभु की सहायता से अपने जीवन को बलदने का निश्चय करना शामिल है। मन फिराव हर व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है।

मन फिराओ या काट डाले जाओ (आयतें 6-9)

फिर मसीह ने यह ज़ोर देने के लिए कि परमेश्वर सहनशील है, परन्तु उसके अनुग्रह की सीमा है (देखें रोमियों 2:5, 6; यिर्मयाह 8:20; आमोस 4:12) एक दृष्टांत कहा (देखें रोमियों 2:4; 2 पतरस 3:9)। उसने अंजीर के वृक्ष की एक सरल कहानी बताई, जिसमें लगातार तीन वर्ष तक फल नहीं लगा था।[25] इसे एक और अवसर दिया जाना था। यदि एक और वर्ष तक सावधानीपूर्वक देखभाल किए जाने के बावजूद यह फल न लाता तो इसे काट डाला जाना था। फलरहित अंजीर का वृक्ष *बेकार* ही नहीं था, बल्कि इससे भी बढ़कर था क्योंकि यह फल देने वाले पौधों का स्थान और आवश्यक वस्तुएं लेकर, *रुकावट* बना हुआ

था। इसलिए इसका काट डाला जाना *आवश्यक* था।

इसे एक कौम के रूप में यहूदियों पर लागू किया जा सकता है। यीशु उनके साथ लगभग तीन वर्ष तक रहा था; पर अविश्वास के कारण वे निष्फल ही रहे थे। उन्हें एक और अवसर दिया जाना था: मसीह ने उनके साथ कुछ और महीने रहना था। फिर, अपने स्वर्गारोहण के बाद उसने लोगों को पाप के विषय में निरुत्तर करने के लिए (यूहन्ना 16:8) और अपना राज्य स्थापित करने के लिए यरूशलेम में पवित्र आत्मा भेजना था।[26] उसके बाद भी, यदि वे मन न फिराते तो उन्होंने परमेश्वर के लोग होने से "काट डाले" जाना था। विपत्ति सिर पर खड़ी थी।[27]

परन्तु हमें इसे केवल दूसरों पर ही लागू नहीं करना चाहिए। प्रभु की इच्छा होगी कि हम सब उसकी शिक्षाओं को अपने ऊपर लागू करें। परमेश्वर ने हर किसी को मन फिराने अर्थात उसके लिए फल लाने का अवसर दिया है।[28] यदि हम अवसर की अनदेखी करते हैं, तो एक समय आएगा, जब वह कहेगा, "बहुत हो गया! जिन पर फल नहीं लग रहा उन्हें काट डालो!" बुद्धिमानों के लिए कही गई इस बात को सुनें: इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, मन फिराने और बदलने का समय *अभी* है।

आनन्द करने पर पुरानी और नई शिक्षा (लूका 13:10-21)

जो आनन्दित नहीं हुए थे (आयतें 10-17क)

एक दिन, सब्त के दिन आराधनालय में सिखाते हुए यीशु ने एक स्त्री को चंगा किया जो अठारह वर्षों से कुबड़ी थी (आयतें 10-13)।[29] इस आश्चर्यकर्म से सब्त का एक और विवाद खड़ा हो गया (आयत 14)। मसीह ने पहले सब्त के दिन पशु को कुएं से निकालने का एक उदाहरण दिया था (मत्ती 12:11, 12)। इस बार फिर उसने ऐसा ही एक उदाहरण दिया:

> हे कपटियो, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बांध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती? (आयतें 15ख, 16)।

एक बार फिर उसके विरोधी जवाब नहीं दे पाए और वे "लज्जित हो गए" (आयत 17क)।

जो आनन्दित हुए थे (आयतें 17ख-21)

स्त्री की चंगाई से मसीह के शत्रु तो नहीं, परन्तु वहां उपस्थित कई लोग "उन महिमा के कामों से, जो वह करता था, आनन्दित हुए" थे (आयत 17ख)। उनका आनन्द करना भविष्य में उसे ग्रहण करने का एक सकारात्मक संकेत था। यीशु ने दो दृष्टांत दोहराए, जिन में अन्ततः राज्य के बढ़ने का पूर्वाभास था (आयतें 18-21; देखें मत्ती 13:31-33[30])।

अविश्वास पर पुरानी और नई शिक्षा
(लूका 13:22; यूहन्ना 10:22-39)

दो दृष्टांतों को लिखने के बाद, लूका ने लिखा है कि मसीह ''नगर-नगर, और गांव-गांव होकर उपदेश करता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा था'' (लूका 13:22)। इससे इसी तथ्य का संकेत मिल सकता है कि प्रभु चाहे कहीं भी गया, पर उसका ध्यान मंजिल पर ही था। दूसरी ओर इससे यह संकेत मिल सकता है कि यीशु इस समय के लगभग यरूशलेम में गया। यूहन्ना द्वारा दिए गए सुसमाचार के वृत्तांत में बाद की यहूदिया की सेवकाई के अन्त के निकट उसके इस नगर में जाने के बारे में बताया गया है (यूहन्ना 10:22-39)।

समर्पण के पर्व के लिए यीशु यरूशलेम में गया (यूहन्ना 10:22)। यह पर्व यहूदियों के मुख्य पर्वों में से अन्तिम था। इसका आरम्भ दोनों नियमों के बीच मक्काबी स्वतन्त्रता के समय में हुआ था। इसे एंटियोकुस ऐपिफेनस द्वारा मन्दिर को अशुद्ध करने के बाद इसके पुनः समर्पण[31] के लिए मनाया जाता था (लगभग 165 ई.पू.)। आज इसे इब्रानी शब्द ''समर्पण'' या हनुक्का (या चनुक्का) से जाना जाता है। यह पर्व दिसम्बर में आता था (ध्यान दें यूहन्ना 10:23क)। यीशु के समय में, यह समारोह आठ दिन तक चलता था[32] और इसमें आम तौर पर बहुत भीड़ होती थी।

बातों से अविश्वास दिखाया गया (यूहन्ना 10:23ख-30)

समारोहों के दौरान, यीशु ''मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में'' था (आयत 23ख)।[33] यह अन्यजातियों के आंगन की पूर्वी दीवार के साथ-साथ छता हुआ क्षेत्र था।[34] यहूदी अगुओं ने[35] चुनौती देते हुए कि ''तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हम से साफ़-साफ़ कह दे'' उसे घेर लिया (आयत 24)। प्रभु ने पर्यायवाची शब्दों का इस्तेमाल करते हुए खुलेआम यह संकेत दिया कि वही मसीहा है,[36] परन्तु उसने खुलेआम यह नहीं कहा था कि ''मैं ही मसीह हूं।''[37] दावा तो कोई भी कर सकता है। इसलिए उसने अपनी शिक्षा तथा कामों से यह *दिखाने* को प्राथमिकता दी कि वही मसीहा/ख्रिस्तुस है (आयतें 25, 37, 38)।[38]

निश्चय ही, उसके शत्रुओं ने उस पर विश्वास करने के लिए प्रश्न नहीं पूछा था। वे तो उस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाने का बहाना ढूंढ़ रहे थे, ताकि वे उसे मार सकें।[39] यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''मैंने तुम से कह दिया पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं, वे ही मेरे गवाह हैं। परन्तु तुम इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो'' (आयतें 25, 26)।

अपनी ''भेड़ों'' की बात करते हुए वह इस अध्याय में पहले आए अच्छे चरवाहे का उदाहरण दे रहा था (आयतें 1-18)। उसने अपनी भेड़ों के लिए अपनी और अपने पिता द्वारा की जाने वाली देखभाल की बात की (आयतें 27-29[40]) अर्थात जो उसमें विश्वास लाकर उसके पीछे चलते हैं। उसने कहा, ''मैं और पिता एक हैं'' (आयत 30)।

कामों से दिखाया गया अविश्वास (यूहन्ना 10:31-39)

मसीह की स्पष्टवादिता से उसके शत्रु क्रोधित हो गए और उन्होंने एक बार फिर उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिए (आयत 31; देखें यूहन्ना 8:59)। उन्होंने यीशु से कहा कि वे "... परमेश्वर की निन्दा करने के कारण" उसके साथ ऐसा कर रहे हैं, "और इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता है" (10:33)। उसने उत्तर दिया कि व्यवस्था में कई बार परमेश्वर के प्रतिनिधियों को "ईश्वर" कहा गया है (आयत 34; देखें भजन संहिता 82:6)।[41] यदि वह परमेश्वर की निन्दा नहीं थी, तो जो वास्तव में "परमेश्वर" कहलाने के योग्य है, उसकी बात परमेश्वर की निन्दा कैसे हो सकती है (आयतें 35,[42] 36)! उसने उन्हें यह देखने के लिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है कि नहीं, अपने कामों (आश्चर्यकर्म) की परख करने की चुनौती दी (आयतें 37, 38)।

उसकी बात सुनने से इनकार करते हुए, उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की (आयत 39क; देखें यूहन्ना 7:44)। वह फिर उनके हाथ से निकल गया (आयत 39ख; देखें यूहन्ना 8:59)।

मसीह की चिंता पर पुरानी और नई शिक्षा (मत्ती 19:1, 2; मरकुस 10:1; लूका 13:23-35; यूहन्ना 10:40-42)

एक बार फिर, यरूशलेम ने यीशु के लिए अपने द्वार बन्द कर लिए थे। वहां उसका काम वर्तमान के लिए किया गया था।[43] वह अपने चेलों को साथ लेकर उस क्षेत्र के उत्तर में चला गया, जहां तीन साल पहले उसे बपतिस्मा दिया गया था: "फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहां यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था" (यूहन्ना 10:40क)। इस क्षेत्र को पिरिया के नाम से जाना जाता था।[44]

पिरिया को यहूदियों का इलाका माना जाता था। इसके लोग उन्हीं धार्मिक तथा सामाजिक नियमों को मानते थे, जिन्हें गलील और यहूदिया के लोग। परन्तु नदी के पश्चिम वाले यहूदी इन्हें इतना महत्व नहीं देते थे। मसीह का ऐसा विचार नहीं था, क्योंकि पिरिया में ऐसे लोगों की भरमार थी, जिन्हें उद्धार की आवश्यकता थी। अगले साढ़े तीन महीनों का अधिकतर समय उसने यहीं बिताया था।[45]

उसे उस नई स्थिति में सफलता मिली: "बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली" (मत्ती 19:2)। उसने उन्हें वचन सुनाया (मरकुस 10:1), उन्हें चंगा किया (मत्ती 19:2), और दुष्टात्माओं को निकाला (लूका 13:32)। "बहुत से लोग उसके पास आकर कहते थे, 'यूहन्ना ने तो कोई चिह्न नहीं दिखाया,[46] परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इसके विषय में कहा था, वह सब सच था।' और वहां बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया" (यूहन्ना 10:41, 42)।

इस पाठ को हम पिरिया की यीशु की सेवकाई की दो घटनाओं अर्थात यीशु *की* चेतावनी और यीशु *को* चेतावनी से समाप्त करेंगे।

यीशु की चेतावनी (लूका 13:23-30)

एक दिन मसीह के वचन सुनाते हुए किसी ने पूछा, ''हे प्रभु, क्या उद्धार पाने वाले थोड़े हैं ?'' (लूका 13:23क)। शायद यह उसकी पहली शिक्षा पर प्रतिक्रिया थी कि यदि मन नहीं फिराते तो सबका नाश होगा (लूका 13:1-5)। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहा था कि थोड़े ही लोग बचाए जाएंगे (मत्ती 7:13, 14)। इस अवसर पर उसका उत्तर कौन उद्धार पाएगा और कौन नहीं, पर शिक्षा के मेल पर था:

- उद्धार का मार्ग तंग और कठिन है (लूका 13:24; मत्ती 7:13, 14 से तुलना करें)।
- कुछ लोगों को लगता है कि उनका उद्धार हो जाएगा, पर होगा नहीं (लूका 13:25-27; मत्ती 7:21-23 से तुलना करें)।
- कुछ (अन्यजातियों) का उद्धार हो जाएगा, यद्यपि यहूदियों को नहीं लगता था कि उनके लिए उद्धार पाना सम्भव हो सकता है (लूका 13:28-30; मत्ती 8:11, 12 से तुलना करें)।

मसीह प्रश्न पूछने वाले को यह समझाना चाहता था कि महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि कितने लोगों का उद्धार होगा, बल्कि यह है कि क्या उद्धार पाने वालों में *उसका* नाम शामिल होगा या नहीं।

यीशु को चेतावनी (लूका 13:31-35)

यीशु को उन फरीसियों द्वारा बाधित किया गया था, जिन्होंने उससे कहा था, ''यहां से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है'' (आयत 31)। जिस खतरे की उन्होंने बात की थी, वह वास्तविक था। गलील की तरह ही हेरोदेस भी पिरिया का हाकिम था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को पिरिया के इलाके में कैद करके मार डाला गया था। इसके अलावा, जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया है, हेरोदेस के मन में यीशु को जानने की दुर्भावनापूर्ण जिज्ञासा थी और वह उसकी खोज में था (देखें मरकुस 6:14; लूका 9:9; 23:8)।

फरीसियों के यीशु को इस प्रकार चौकस करने का कारण अस्पष्ट है। ऐसा नहीं हो सकता कि उन्हें उसकी भलाई की चिन्ता थी। यदि वे पिरिया में रहते थे, तो हो सकता है कि वे चाहते हों कि वह गड़बड़ी करने से पहले वहां से चला जाए। वे जहां भी रहते हों, शायद उनकी प्राथमिकता यह थी कि वह यहूदिया में चला जाए, जहां महासभा के पास अधिकार थे।

यीशु के उत्तर से संकेत मिला कि उसे हेरोदेस की परवाह नहीं थी, पर जिस प्रकार उसने उत्तर दिया, उससे लगता है कि फरीसी घबरा गए। उसने कहा, ''जाकर उस लोमड़ी से कह दो[47] कि देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा

करता हूं, और तीसरे दिन अपना कार्य पूरा करूंगा[48]'' (आयत 32)। उसने और कहा, ''तौभी मुझे आज, कल और परसों चलना अवश्य है'' (आयत 33क)। यह सब यह कहने का कि ''मुझे काम करना है और हेरोदेस चाहे जो भी कर ले, मैं उसे अवश्य पूरा *करूंगा*'' का गुप्त शब्द था। फिर उसने आगे कहा, ''क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यवक्ता यरूशलेम के बाहर मारा जाए'' (आयत 33ख)। इस बात का जो बड़ी उपहासपूर्ण है, अर्थ है, ''हेरोदेस के मुझे पिरिया में मारने की चिंता न करो, क्योंकि यह अवश्य है कि मैं यरूशलेम में ही मरूं। आखिर वहीं तो तुम लोगों ने परमेश्वर के इतने वक्ताओं को मारा है!'' यह टिप्पणी यरूशलेम के बारे में स्पष्ट पुकार के बाद दी गई थी (आयतें 34, 35)।[49]

सारांश

पुरातनी वस्तुओं के संग्रहकर्त्ता पुरानी चीज़ों को इकट्ठा करने के शौकीन होते हैं। वे ज़ोर देते हैं, ''जो बात पुरानी चीज़ों में होती थी वह नई से कहां बनती है।'' दूसरे लोगों को नई चीज़ें पसन्द होती हैं: वे हर चीज़ नई चाहते हैं। उन्हें लगता है, ''नई होगी, तो अच्छी ही होगी।'' वास्तव में ''पुरानी हो या नई'' *दोनों* ही अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। उदाहरण के लिए, जब मैं डॉक्टर के पास जाता हूं, तो मैं चाहता हूं कि वह मेरे इलाज के लिए नई मशीन का इस्तेमाल करे। इसके साथ ही मैं चाहता हूं कि वह मेरे साथ अपने पुराने मरीज़ों जैसा ही व्यवहार करे। इस पाठ में हमने यीशु को ''पुरानी'' शिक्षा दोहराते, परन्तु पुरानी सच्चाइयों की ''नई'' समझ भी देते देखा है। परमेश्वर के वचन की एक अद्‌भुत बात यह है कि यह पुराना होने के बावजूद, नया ही रहता है!

नोट्स

जिन आयतों का हमने अध्ययन किया है, उनमें प्रचार की बहुत सम्भावनाएं हैं। भौतिकवाद पर मसीह की शिक्षा (लूका 12:13-34) का इस्तेमाल ''चीज़ें तुम्हें निराश न कर दें'' पर प्रवचन के लिए किया जा सकता है। धनी मूर्ख के दृष्टांत पर एक प्रवचन (लूका 12:13-21) अगले पाठ में होगा। मन फिराव पर प्रवचनों से बढ़कर शायद और कोई नहीं होगा (लूका 13:1-5)। फलदायक मसीही बनने की ज़िम्मेदारी पर प्रचार करने के लिए आप अफल अंजीर के वृक्ष का दृष्टांत दे सकते हैं (लूका 13:6-9)।

टिप्पणियां

[1]परमेश्वर की प्रेरणा की बात का इनकार करने वाले कुछ लोग कहते हैं कि सुसमाचार के वृत्तातों के लेखक उलझन में थे कि यीशु ने कोई शिक्षा यहां दी या वहां। उनका सुझाव होता है कि मसीह ने एक ही शिक्षा दो बार नहीं दी हो सकती-तो भी वे स्वयं अपने ही पसन्दीदा विषयों को अक्सर दोहराते हैं। इसके अलावा परमेश्वर ने भी तो दस आज्ञाओं को दोहराया (निर्गमन 20; व्यवस्थाविवरण 5)। यदि पिता दोहरा सकता है तो

पुत्र क्यों नहीं? [2]''जीवन' के लिए हमारे पास एक ही शब्द है, परन्तु दो शब्दों के साथ यूनानी भाषा समृद्ध है–एक [*bios*] उस जीवन को व्यक्त करने के लिए है, *जो हम जीते हैं,* जबकि दूसरा [*zoa*] उस जीवन को व्यक्त करने के लिए, *जिससे हम जीवित हैं;* और मसीह यहां दूसरे शब्द की ही बात कर रहा है'' (रिचर्ड सी. ट्रेंच, *नोट्स आॅन द पैरेबल्स आॅफ़ अवर लाॅर्ड* [वैस्टवुड, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1953], 338)। [3]डब्ल्यू. ई. वाईन, *''प्लेनेक्सिया,'' द एक्सपेंडड वाईन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी आॅफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* सं. जाॅन आर. कोहलेन बर्गर III विद जेम्स ए. स्वेन्सन (मिनियापुलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 245. [4]इस दृष्टांत पर चर्चा के लिए, पृष्ठ 144 पर ''एक सफल व्यापारी की गलतियां'' पाठ देखें। [5]लूका ने लूका 6 में पहाड़ी उपदेश की अधिकांश शिक्षाएं लिखी हैं, परन्तु शिक्षा का कुछ भाग प्रभु द्वारा बाद के अवसरों में दोहराए जाने वाले मूल विचारों में ही लिखा गया। लूका 12:22–31 के साथ मत्ती 6:25–34 और लूका 12:33, 34 के साथ मत्ती 6:19–21 की तुलना करें। [6]परमेश्वर ने उन्हें राज्य दिया *था;* उसने मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त पर राज्य/कलीसिया की स्थापना की थी (प्रेरितों 2)। [7]1 तीमुथियुस 6:17–19 भी देखें। बाद में यीशु ने यह अधिकार एक धनी जवान हाकिम को दे दिया (देखें मत्ती 19:21)। [8]यह उदाहरण ट्रेंच, 341 के आॅगस्टिन से लिया गया था। [9]नील आर. लाइटफुट, *द पैरेबल्स आॅफ़ जीज़स,* पार्ट 1 (आॅस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट. कं., 1963), 74. [10]इसे प्रभु के द्वितीय आगमन का दूसरा स्पष्ट हवाला माना जाता है। पहला हवाला मत्ती 16:27 में था।

[11]यीशु ने ''दृष्टांत'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, परन्तु पतरस ने किया (लूका 12:41)। याद रखें कि नया नियम कई बार ''दृष्टांत'' शब्द का इस्तेमाल उस अर्थ में करता है, जिसे हम आम तौर पर उदाहरण कहते हैं। [12]मत्ती 24:43 में यीशु ने अघोषित चोर का उदाहरण दोहराया। यह उदाहरण उन लोगों को, जो उसके द्वितीय आगमन का समय ठहराने का प्रयास करते हैं, सदा के लिए चुप कराने के लिए होना चाहिए। [13]मशालों और विवाह के भोज का हवाला हमें इसी मूल संदेश के साथ बाद के एक दृष्टांत का स्मरण कराता है (मत्ती 25:1–13)। [14]प्रभु ने इस उदाहरण का इस्तेमाल अपनी सेवकाई के अन्तिम सप्ताह के दौरान दो बार किया (देखें मत्ती 24:45–51)। [15]लूका 12:46 के अनुसार स्वामी ''[अविश्वासी भण्डारी] को टुकड़े–टुकड़े कर देगा।'' यह यूनानी पवित्र शास्त्र का अक्षरश: अनुवाद है, परन्तु इस वाक्य का यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि उस मनुष्य के शरीर को टुकड़ों में काटा जाएगा। (आयत का अगला भाग पद के छोटा होने की बात करता है, जो काट डाला जाने पर सम्भव नहीं हो सकता।) यह हवाला सम्भवतया उसे पड़ने वाली बहुत मार (देखें आयत 47) के लिए है, जिससे ''[उसकी पीठ] चूर–चूर'' हो जानी थी। [16]यदि लूका 12:47, 48 के शब्दों पर उससे अधिक दबाव डाला जाए जितना प्रभु चाहता था, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि *अज्ञानता* का लाभ है, जो कि सच नहीं है (यूहन्ना 8:32; देखें प्रेरितों 17:30)। [17]आपको चाहिए कि यह ज़ोर देते हुए, कि आशिषों के साथ ज़िम्मेदारी भी मिलती है, परमेश्वर द्वारा हमें दी जाने वाली आशिषों के ढंगों की सूची बताएं। यह तथ्य कि प्रभु ने आपको यह सबक देना ठीक समझा, आप पर अतिरिक्त ज़िम्मेदारी डालता है। [18]देखें मरकुस 10:38, 39. ''बपतिस्मा'' शब्द का अक्षरश: अर्थ ''डुबोना'' है। रूपक के रूप में इस्तेमाल करने पर, ''बपतिस्मा'' अभिभूत होने के लिए हो सकता है। क्रूस पर, प्रभु दुख में *डूबा हुआ* था। [19]ए. टी. राॅबर्ट्सन, *इपोक्स इन द लाइफ़ आॅफ़ जीज़स* (लंदन: हाॅडर एण्ड स्ट्राउटन, पृष्ठ नहीं), 127; राॅबर्ट डंकन कल्वर, *द लाइफ़ आॅफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 1979 में उद्धृत। [20]दूसरों के साथ मेल–मिलाप रखने और प्रयास करने के लिए ये पद देखें: मत्ती 5:9; रोमियों 12:18; 14:19; 1 थिस्सलुनीकियों 5:13; याकूब 3:17; 1 पतरस 3:11.

[21]इस प्रकार के झगड़े के सम्बन्ध में, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 169 पर देखें। [22]हो सकता है कि इस त्रासदी की खबर उस क्षेत्र में जहां यीशु था, अभी–अभी पहुंची हो। बहुत से लोगों की रुचि अनन्त सच्चाइयों के बजाय वर्तमान घटनाओं में होती है। जाॅन एफ़. कार्टर ने अनुमान लगाया है कि पिलातुस ने गलीलियों को उनके बलिदन भेंट करने की तरह *क्यों* मारा था: ''क्या वे रोम के विरुद्ध विद्रोह की तैयारी कर रहे थे? क्या ऐसा विद्रोह करके वे स्वयं को होमबलि करके चढ़ा रहे थे? यदि उनका दोष नहीं था, तो क्या पिलातुस को उनके राजद्रोह करने का संदेह था?'' (जाॅन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी आॅफ़ द*

गॉस्पल्स [नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961], 205)।[23] हो सकता है कि ''शीलोह का गुम्मट'' यरूशलेम में शीलोह के कुण्ड के निकट हो, परन्तु न तो परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई, और न परमेश्वर की प्रेरणा रहित किसी पुस्तक में इसका कोई हवाला है।[24]यूहन्ना 9:2 में एक अन्धे व्यक्ति के सम्बन्ध में ऐसा ही प्रश्न उठा था।[25]यह इस तथ्य की बात हो सकती है कि सामान्यतया अंजीर के पेड़ को फल देने के योग्य बनने में तीन वर्ष का समय लग जाता था।[26]यदि हम एक और वर्ष लेकर चलें तो इससे मसीह की पृथ्वी की सेवकाई के अन्तिम पांच महीने और यरूशलेम में कलीसिया के अस्तित्व के आरम्भिक महीने भी शामिल होंगे।[27]यहूदी जाति द्वारा यीशु को ठुकराए जाने के परिणामों का चरम 70 ईस्वी में हुआ, जब रोमियों द्वारा यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया। आने वाला वह विनाश ही मसीह के मन में इस समय होगा (देखें लूका 12:34, 35)। [28]परमेश्वर हम सभी को ''फल लाने वाले'' देखना चाहता है (मत्ती 7:20; रोमियों 7:4; गलातियों 5:22, 23; फिलिप्पियों 1:11; तीतुस 3:14)।[29]स्पष्टतया उसकी रीढ़ की हड्डी में नुक्स था। बाइबल कहती है कि उस स्त्री का ''दुर्बल मन'' था (आयत 11 में यूनानी का मूल अनुवाद), और यीशु ने संकेत दिया कि उसे शैतान ने ''बान्ध रखा'' था (आयत 16)। इसका अर्थ हो सकता है कि वह दुष्टात्मा से पीड़ित थी; परन्तु उसके कष्ट और यीशु के चंगा करने का ढंग उसकी शारीरिक अपंगता को दिखाता है। पौलुस के शारीरिक ''शरीर में कांटा'' ''शैतान का एक दूत'' कहा गया था (2 कुरिन्थियों 12:7), बेशक यह प्रेरित दुष्टात्मा से ग्रस्त नहीं था।[30]इन दृष्टांतों के यीशु के पहले उपयोग की तरह लूका 13:18–21 उसके सुनने वालों को अपने शत्रुओं के प्रभाव से बचने की चेतावनी *हो सकता* है। परन्तु पुन: संदर्भ इसकी और सकारात्मक प्रासंगिकता की मांग करता लगता है।

[31]एक और शब्द जिसका इस्तेमाल हो सकता है, वह मन्दिर का ''पुन: शुद्धिकरण'' है। एक अप्रामाणिक स्रोत (2 मक्काबियों 10:5) में ''मन्दिर का शुद्धिकरण'' की बात है।[32]एक यहूदी दन्तकथा के अनुसार, ताजा तेल डाले जाने तक मन्दिर में आठ दिन तक एक दिन वाला तेल जलाया जाता था। आज इस पर्व को ज्योतियों के पर्व के रूप में भी जाना जाता है। पर्व का प्रतीक आठ शाखाओं वाला शमादान (मिनोरा) है। पर्व के हर दिन, आठों शमाएं जलने तक एक शमा जलाई जाती थी।[33]बाद में, पतरस ने यहां पर अपना दूसरा सुसमाचार संदेश सुनाया (प्रेरितों 3:11)। यरूशलेम के आरम्भिक मसीहियों के लिए इकट्ठा होने का यह प्रसिद्ध स्थान बन गया (देखें प्रेरितों 5:12)। यहूदी परम्परा के अनुसार सुलैमान के ओसारे की दीवार सुलैमान द्वारा पहले बनाए गए मन्दिर से ही रहने दी गई (प्रेरितों 3:11 में ''उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है'' है)।[34]''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 102 पर मन्दिर का रेखाचित्र देखें।[35]यूहन्ना के इस भाग में, ''यहूदियों'' शब्द (यूहन्ना 10:24) सामान्यतया यहूदी *अगुओं* के लिए है।[36]उदाहरण के लिए, वह मसीहा के लिए दानिय्येल द्वारा प्रयुक्त शब्द ''मनुष्य का पुत्र'' इस्तेमाल करता था (मत्ती 8:20; 9:6; 10:23; 12:8)। यहूदी अगुओं को यह समझने में कोई परेशानी नहीं थी कि वह ख्रिस्त/ईश्वरीय/परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर रहा था; यह एक कारण था कि वे उसे मरवा डालना चाहते थे (देखें यूहन्ना 5:18)। तौ भी वे उसी से ''स्पष्ट'' और लोगों के सामने कहलवाना चाहते थे कि वह मसीह है ताकि वे उसे मार डालने का मुकदमा अच्छी तरह कर सकें।[37] *अकेले में,* उसने ''मसीह'' होना मान लिया था (मत्ती 16:16, 17, 20)। अब तक हमारे अध्ययनों में यीशु के ''मसीह'' के रूप में होने के उदाहरणों के लिए देखें मरकुस 9:41; लूका 2:11, 26; यूहन्ना 1:41; 4:25, 29; 9:22. [38]उसका परोक्ष ढंग से अपने शत्रुओं के साथ झगड़ा भी टल गया, जिस कारण अन्तत: उसकी मृत्यु होनी थी। [39]अन्तत: उन्होंने उस से शपथ दिलाकर मानने के लिए दबाव डाला कि वही मसीह है। फिर उन्होंने परमेश्वर की निन्दा के पाप के लिए उसे मृत्यु का दोषी पाया (मत्ती 26:63–68)।[40]यूहन्ना 10:28, 29 को कई बार ''धर्म के त्याग की असम्भावना'' को साबित करने की कोशिश के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस पद में ज़ोर परमेश्वर का अपनी भेड़ों की देखभाल करने पर है। इससे मनुष्य जाति की स्वतन्त्र इच्छा को कुछ फर्क नहीं पड़ता। भेड़ों को बाड़ कूदने वाली माना जाता है, वैसे ही परमेश्वर की भेड़ें सुरक्षा के उसके हाथ से कूद सकती हैं। इस पद में यह नहीं सिखाया गया कि परमेश्वर की सन्तान गिर नहीं सकती (1 कुरिन्थियों 10:13), परन्तु इसमें यह सिखाया गया है कि जब तक हम परमेश्वर की सुरक्षा की छाया में रहना चुनते हैं, तब तक किसी में हमें उससे ''छीनने'' की सामर्थ नहीं है।

[41]मौरमन लोग भजन संहिता 82:6 और यूहन्ना 10:34 का यह सिखाकर कि जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं, वह कभी हमारे जैसा ही था (अर्थात मनुष्य है) और हम परमेश्वर जैसे (अर्थात ईश्वर) बन सकते हैं, अजीब इस्तेमाल करते हैं। यह एक स्पष्ट और निर्विवाद पद की शिक्षा को गिराने का एक उदाहरण है। परमेश्वर ने अपनी इच्छा को इस प्रकार प्रकट नहीं किया। [42]आयत 35 में इन शब्दों को रेखांकित कर लें: ''पवित्र शास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती।'' इसका अर्थ है कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन झुठलाया नहीं जा सकता। अविश्वासी संसार को यही सीखने की आवश्यकता है! [43]फसह और मरने के लिए वापस आने तक यह यीशु का यरूशलेम में अन्तिम बार जाना था। [44]''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' वाला मानचित्र देखें। [45]उसने यहूदिया के बैतनिय्याह में वापस एक चक्कर लगाया (यूहन्ना 11)। वह पलिश्तीन के दूसरे इलाकों में भी गया हो सकता है। (पृष्ठ 174 पर ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। पिरिया से, यरदन पार करके पलिश्तीन के अन्य क्षेत्रों में जाया जा सकता था।) परन्तु उसका अधिकांश समय पिरिया में बीत गया था। सुसमाचार के चारों वृत्तांतों में उसकी सेवकाई का उल्लेख है (मत्ती 19:1, 2; मरकुस 10:1; यूहन्ना 10:40), परन्तु इस काल के सम्बन्ध में हमारी जानकारी का मुख्य स्रोत लूका ही है। [46]इस वाक्य से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के बारे में हमारी जानकारी बढ़ जाती है, जो कहीं और नहीं मिलती कि उसने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया। [47]एक कहावत है: ''लोमड़ी की तरह चालाक।'' हेरोदेस का यह अच्छा विवरण होगा। मैक्गार्वे के अनुसार, यह ''एक मात्र तिरस्कारपूर्ण शब्द'' है ''जिसे यीशु द्वारा किसी व्यक्ति के लिए कहा गया'' हो (जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलडटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 710)। [48]''अपना कार्य पूरा करूंगा'' की जगह किंग जेम्स वर्ज़न में ''मैं पूरा होऊंगा'' है। ''पूरा'' के लिए ''perfected'' यूनानी शब्द का अनुवादित रूप है जिसका अर्थ ''अन्त'' या ''सम्पूर्ण'' है। यह वही ''पूरा हुआ है!'' जिसे यीशु ने क्रूस पर कहते हुए इस्तेमाल किया था (यूहन्ना 19:30)। ''कार्य'' को न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल में उसकी मृत्यु और इसके द्वारा होने वाला हर कार्य कहा गया है। [49]मत्ती 23:37-39 में यह पुकार दोहराई गई थी।